International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

शिक्षा का विकासशील भारत में सामाजिक समानता पर प्रभाव

प्रदीप कुमार
शोध छात्र
डॉ. रविकान्त
सरल मार्गदर्शक शिक्षा विभाग
ई-मेल- pradeeptyagitashu123@gmail.com

सार

ब्रिटिश शासन को भारतीयों के लिए अत्याचारी माना जाता है, और इसे अधिकांश उदार विचारकों द्वारा नकारात्मक रूप से देखा जाता है अंग्रेजों ने भारत से धन-संपत्ति का शोषण करने के साथ-साथ भारतीय समाज में कई तकनीकी प्रगति भी की। अंग्रेजों से पूर्व की शिक्षा प्रणाली धार्मिक मूल्यों पर आधारित थी और समाज अंधविश्वासों और बुराइयों से भरा हुआ था। अंग्रेजों ने एक आधुनिक और तर्कसंगत शिक्षा प्रणाली स्थापित की, जिसने लोगों की सोच में परिवर्तन लाया और कई सामाजिक बुराइयों को खत्म करने में सहायक साबित हुई। यह शोधपत्र शिक्षा प्रणाली में हुए परिवर्तनों पर केंद्रित है और यह प्रदर्शित करता है, कि ये बदलाव उतने नकारात्मक नहीं थे, जितना कि अनेक भारतीय नेताओं ने माना। इन परिवर्तनों ने आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया और भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना पर भी प्रभाव डाला। यह शोधपत्र इस विकास को उचित ठहराने का प्रयास करता है अंततः, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करता है

परिचय

अंग्रेज मूलतः 1600 ई. के अंत में भारत आए, और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन 1757 में प्रभावी रूप से आरंभ हुआ। अंग्रेजों ने भारत पर 200 वर्षों तक शासन किया, और इन वर्षों के दौरान कई क्रांतियाँ, युद्ध, संघर्ष और विद्रोह हुए, जिन्होंने भारतीय सभ्यता

को गहरे नुकसान पहुँचाया। हालांकि इसके नकारात्मक परिणाम भी सामने आए, लेकिन उन्होंने अपनी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारत को कुछ लाभ भी पहुँचाया। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने कई चरणों का अनुभव किया है वर्तमान शिक्षा प्रणाली को आकार देने के लिए काफी प्रयास किए गए है। गुरुकुल से लेकर अंग्रेजी शिक्षा तक की यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए। प्रत्येक चरण के अपने फायदे और नुकसान थे। अंग्रेजों द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव के पीछे की मंशा को समझने के लिए ब्रिटिश-पूर्व और ब्रिटिश-उत्तर शिक्षा प्रणाली की समीक्षा की गई है यूरोपीय मिशनरियों के आगमन ने देश में शिक्षा के एक नए युग की शुरुआत की और इसे प्रभावशाली ढंग से विकसित किया। इन मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य यूरोपीय शिक्षा पद्धति के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करना था। उन्होंने जो शिक्षा प्रणाली प्रदान की, उसने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला। 1835 में, लॉर्ड मैकाले ने भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव सफलतापूर्वक रखी। इसका एकमात्र उद्देश्य भारतीयों को इस तरह से शिक्षित करना था कि वह पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक और बौद्धिक उपलब्धियों में अंग्रेजों के समकक्ष आ जाए।

भारत को पश्चिमीकरण की ओर अग्रसर करने के लिए अंग्रेजों ने जो सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाया, वह था अंग्रेजी शिक्षा का एक नया रूप पेश करना। मैकाले की 1835 की शिक्षा रिपोर्ट ने ब्रिटिश शैक्षणिक नीति पर निर्णायक प्रभाव डाला, जो भारतीय सभ्यता के प्रति पश्चिमी तर्कसंगत दृष्टिकोण का एक स्पष्ट उदाहरण है अंग्रेजों के शासन से पूर्व, दरबारी भाषा फारसी थी, और मुस्लिम समुदाय उर्दू का उपयोग करता था, जो मुगलों द्वारा फारसी, अरबी, और संस्कृत का मिश्रण था। उच्च शिक्षा का अधिकांश हिस्सा धार्मिक था, और अरबी एवं संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य था। कंपनी ने कोलकाता के मदरसे और बनारस में संस्कृत कॉलेज को कुछ वित्तीय सहायता प्रदान की। 1782 से 1795 तक, गवर्नर-जनरल के रूप में वॉरेन हेस्टिंग्स ने खुद संस्कृत और फारसी का अध्ययन किया, और कई

अन्य कंपनी अधिकारी प्राच्य विद्या में कुशल थे, जिनका प्रभाव महत्वपूर्ण था। हालांकि, मैकाले ने इस प्राच्यवाद का सख्त विरोध किया, यह कहते हुए कि हम जनता के धन को बर्बाद करने वाले उन पुस्तकों को प्रकाशित करने वाले बोर्ड है, जिनका मूल्य उस कागज से भी कम है, जिस पर वह छपी है। उन्होंने यह भी कहा, मुझे संस्कृत या अरबी का कोई ज्ञान नहीं है, लेकिन मैंने उनके मूल्य का सही मूल्यांकन करने के लिए जो संभव था, किया है। उन्होंने यह टिप्पणी की, कौन इनकार कर सकता है, कि एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक शेल्फ भारत और अरब के समस्त देशी साहित्य के बराबर है? संस्कृत में लिखी गई सभी पुस्तकों से संकलित ऐतिहासिक जानकारी इंग्लैंड के प्रारंभिक विश्वविद्यालयों में उपयोग की जाने वाली सबसे साधारण संक्षेपणों की तुलना में भी कम मूल्यवान मानी गई।

आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ने ब्रिटिश शासकों के लिए दो महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरे किए एक तो उन्हें भारतीय समाज के सुधार का श्रेय मिला, और दूसरा, उन्होंने सत्ता के वितरण की एक विशेष प्रणाली स्थापित की, जिसने शक्तियों के संतुलन को बनाए रखा और स्थानीय निवासियों को आपसी विवादों में उलझाकर भारत में अपने शासन को लंबे समय तक स्थिर रखा। नई आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लागू होने के बाद, सरकारी समर्थन की कमी के कारण पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली धीरे-धीरे समाप्त होने लगी, जिससे भारतीय लोग शिक्षा के पारंपरिक तरीकों से दूर होते गए।

लॉर्ड मैकाले ने स्पष्ट रूप से कहा था कि, हमें इस समय एक ऐसा वर्ग बनाने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास करने चाहिए, जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच, जिन पर हम शासन करते है, एक माध्यम बन सकेय ऐसा वर्ग जो रक्त और रंग में भारतीय हो, लेकिन स्वाद, विचार, नैतिकता और बुद्धिमत्ता में अंग्रेजी हो। आधुनिक शिक्षा का कार्यान्वयन का प्रमुख उद्देश्य यह था, कि प्रशासन में अधीनस्थ या निम्न स्तर के पदों की बढ़ती संख्या को भरने के लिए बड़ी संख्या में अंग्रेजों को लाना अत्यधिक खर्चीला और व्यावहारिक दृष्टि से

असंभव था। हालाँकि हम कभी भी नहीं चाहते थे, कि अंग्रेज हमारे देश पर शासन करें, फिर भी हमें उनके प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए, क्योंकि उनके शासन ने कुछ सबसे घातक प्रथाओं को समाप्त किया, जैसे सती प्रथा (जहाँ एक विधवा अपने पति की अग्नि में कूद जाती है)।

भारत में अस्पृश्यता भी एक गंभीर चुनौती थी, जिसका लाभ अंग्रेजों ने उठाया और शिक्षा के माध्यम से इसे समाप्त करने में योगदान दिया। उन्होंने शिक्षा को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से उपलब्ध कराया, जिसके परिणामस्वरूप दलित वर्ग ने विद्रोह किया और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया। विधवाओं को भी नए अधिकार मिले, सती और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन एक अधिक उदार और आधुनिक समाज की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। शिक्षा प्रणाली ने भारतीयों को समाज में फैले मिथकों का अनुसरण करने के बजाय अपने कार्यों के पीछे का कारण समझने में मदद की। आधुनिक विज्ञान और गणित की शिक्षा ने पहले की धार्मिक आधार पर स्थापित प्रणाली की तुलना में गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया। तर्क और विचार को धर्म और मिथकों की तुलना में अधिक महत्व दिया गया, जिससे भारतीयों की सोचने की क्षमता और परिस्थितियों का सामना करने का तरीका बेहतर हुआ। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने लोगों को इन सामाजिक बुराइयों को छोड़ने में भी सहायता की और इस प्रकार समाज के आधुनिकीकरण की व्यापक धारणा को साकार किया। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि ब्रिटिश शासन ने यह प्रदर्शित किया कि उनके उदार विचारों ने बेहतर शासन की नींव रखी।

ब्रिटिश शासकों ने अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रणाली पर विशेष जोर दिया। 1844 में एक अधिसूचना के जरिए सरकारी नौकरी के लिए अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप, अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की लोकप्रियता काफी बढ़ गई। मिशनरियों और उनके सहयोगियों ने यह समझा कि आधुनिक शिक्षा स्थानीय लोगों को

बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। ईसाई मिशनरियों ने कई लोगों, विशेषकर गरीबों को उपदेश और शिक्षा देकर उनके मानसिकता को प्रभावित किया और भारतीय समाज की पिछड़ापन के प्रति असंतोष का भाव पैदा किया। उन्होंने उन्हें विदेशी संस्कृति की ओर आकर्षित किया और अंततः उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। ब्रिटिश शासकों, ईसाई मिशनरियों, और धार्मिक दृष्टिकोण रखने वाले पश्चिमी व्यक्तियों, जैसे विलियम वहरफोर्स और चार्ल्स ग्रांट के सहयोग से, उन्होंने सफलतापूर्वक कई लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की। जैसा कि अपेक्षित था, आधुनिक शिक्षा ने भारतीयों को लॉक, मिल, रूसो, वोल्टेयर, स्पेंसर, और बर्क जैसे कई उदार विचारकों के विचारों से परिचित कराया। इसके अलावा, इसने उन्हें अंग्रेजी, फ्रेंच, और अमेरिकी क्रांतियों के बारे में भी जानकारी प्रदान की। पश्चिमी साहित्य और दर्शन ने भारतीयों के मानसिक क्षितिज और ज्ञान को व्यापक बनाया। अंग्रेजों द्वारा पेश की गई आधुनिक शिक्षा ने दोहरा उद्देश्य पूरा किया, एक ओर उन्हें भारत में बेहतर समाज बनाने का श्रेय मिला, वहीं दूसरी ओर उन्होंने सत्ता के वितरण का एक अनूठा तरीका विकसित किया। यूरोपीय लेखकों की शैली और विषयों ने भारतीयों को प्रेरित किया, जिससे उन्होंने देशभक्ति और अन्य संबंधित विषयों पर विभिन्न प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ करना शुरू किया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह मान्यता प्राप्त करनी चाहिए कि उन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में भी योगदान दिया।

आधुनिक शिक्षा ने अनेक राष्ट्रीय नेताओं, विचारकों और सुधारकों को जन्म दिया। इसने न केवल शासकों की अपेक्षाओं के अनुसार प्रशासन में निम्न स्तरों को भरने के लिए मानव संसाधन उपलब्ध कराया, बल्कि राजा राम मोहन राय, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोखले, गांधी, जिन्ना जैसे प्रमुख व्यक्तित्वों को भी विकसित किया। मौलाना अबुल कलाम आजाद, अंबेडकर, टिलक, लाला लाजपत राय, मोती लाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, पटेल और अन्य ने एक विभाजित, गरीबी से त्रस्त, अंधविश्वासी,

कमजोर, उदासीन, पिछड़े और अंतर्मुखी समाज को एक आधुनिक, खुले, बहुलवादी, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, समृद्ध और शक्तिशाली भारत के निर्माण का दायित्व उठाया। आर्थिक क्षेत्र में लोगों का ध्यान आधुनिक उद्योग और विकास की संभावनाओं की ओर बढ़ा। उस समय, आर्थिक रूप से सबसे उन्नत देश ब्रिटेन ने भारत सहित अपने उपनिवहशों में आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आर्थिक संरचनाओं की स्थापना की। रेलवह और सड़क परिवहन जैसे संचार साधनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अंग्रेजों ने फिजूलखर्ची करने वाले सामंतों के अभिजात वर्ग की जगह नौकरशाही-सैन्य प्रणाली को लागू किया, जिसे उपयोगितावादी टेक्नोक्रेटों ने सावधानी से तैयार किया था, और यह कानून-व्यवस्था बनाए रखने में अत्यंत प्रभावी थी। सरकार की बढ़ती दक्षता ने राजकोषीय बोझ में कमी की अनुमति दी, जिससे राष्ट्रीय उत्पाद का एक बड़ा हिस्सा जमींदारों, पूंजीपतियों और नए पेशेवर वर्ग के लिए उपलब्ध हो गया। इस उच्च वर्ग की आय का एक हिस्सा ब्रिटेन में चला गया, लेकिन अधिकांश धन भारत में ही खर्च हुआ। हालाँकि, उपभोग की प्रवृत्ति में परिवर्तन आया, क्योंकि नए उच्च वर्ग के पास अब हरम और महल नहीं थे, और वह महंगे वस्त्र और आभूषण नहीं पहनते थे। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक हस्तशिल्प क्षेत्र में काम करने वालों को कुछ चुनौतीपूर्ण समायोजन का सामना करना पड़ा। यह प्रतीत होता है कि उत्पादक निवहश में कुछ वृद्धि हुई, जो मुगल काल में लगभग शून्य थी। सरकार ने रेलवह और सिंचाई के क्षेत्र में निवहश किया, जिससे कृषि और औद्योगिक उत्पादन दोनों में सुधार हुआ। नए उपनगरों और आवास के साथ नए शहर और शहरी सुविधाएँ विकसित की गईं। वकीलों, डॉक्टरों, शिक्षकों, पत्रकारों और व्यापारियों का एक नया पेशेवर अभिजात वर्ग बना, जिसने पश्चिमी आदतों को अपनाया। इस समूह के भीतर पुरानी जातिगत बाधाएँ घट गईं, जिससे सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई।

जब आधुनिक शिक्षा की शुरुआत हुई, तब का वातावरण पूरी तरह से अनुकूल था। विभिन्न सामाजिक वर्गों ने अपने-अपने कारणों से इसका स्वागत किया। उन्होंने न केवल इसे अपनाया, बल्कि कंपनी पर भी जोर दिया कि वह भारत में पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा दे और इसे व्यापक रूप से फैलाए। जैसा कि अपेक्षित था, ब्रिटिश शासकों ने आधुनिक शिक्षा को बेहद प्रभावी और प्रशासन के लिए सुविधाजनक पाया। इसने निचले स्तरों पर कर्मियों की उपलब्धता सुनिश्चित की और स्थानीय समुदायों के साथ संपर्क बनाए रखना संभव बनाया। औद्योगीकरण, सुधार और पुनर्जागरण जैसे आधुनिक आंदोलनों का ज्ञान भारतीयों में नई ऊर्जा और उत्साह भरने लगा। लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने लगे। हालांकि अंग्रेजों ने भारत की पारंपरिक संस्कृति और धरोहर को लगभग नष्ट कर दिया, फिर भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि उन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय बुद्धिजीवियों ने मानवतावादी और बौद्धिक दृष्टिकोण से आधुनिक शिक्षा को देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का सबसे प्रभावी समाधान माना। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में बौद्धिक उथल-पुथल सबसे अधिक देखने को मिली। बुद्धिजीवियों और उनके संगठनों का ध्यान पूरी तरह से आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित था। वह भारतीय समाज की प्रगति में बाधा डालने वाले वास्तविक समस्याओं से भलीभांति अवगत थे और भारतीय संस्कृति के क्षरण और शासकों की विभाजनकारी नीतियों को लेकर भी चिंतित थे। पश्चिमी दुनिया के उदार और मानवतावादी विचारों ने भारतीय राष्ट्रीय नेताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिक्षित नेता आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा की तर्कशीलता और अन्य लाभकारी पहलुओं का स्वागत करते थे। इस शिक्षा ने उन्हें बौद्धिक साधन दिए, जिनकी मदद से वह दमनकारी ब्रिटिश शासन का सामना कर सके। उन्होंने ब्रिटिश नस्लीय भेदभाव और उनकी दमनकारी नीतियों के भारतीय समाज पर होने वाले प्रभाव को गहराई से समझा।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विनाशकारी नीतियों ने भारतीय समाज में विद्रोह की चिंगारी भड़काई, जिससे एक संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का उदय हुआ। आर्थिक शोषण ने भारतीय जनता को गहराई से प्रभावित कियाय ब्रिटिश राज ने संसाधनों का एकतरफा दोहन किया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय नागरिकों की आर्थिक स्थिति में भारी गिरावट आई। राजनीतिक दासता ने केवल अधिकारों को छीनने का काम नहीं किया, बल्कि भारतीयों की आत्मनिर्भरता और स्वशासन की क्षमता को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया। जाति के आधार पर असमानता को बढ़ावा देना और प्रजा पर प्रभुत्व स्थापित करना एक घातक संस्कृति का निर्माण कर रहा था, जिसने भारतीय समाज को विभाजित किया। अहंकारी अलगाव का सिद्धांत, जिसमें अंग्रेजों ने खुद को भारतीयों से अलग रखा, और उनके प्रति निरंतर अपमानजनक और घमंडी व्यवहार ने भारतीयों के मन में एक गहरी नाराजगी पैदा की। सरकारी नौकरियों और राजनीतिक पदों से भारतीयों को बाहर रखना, यह दर्शाता था, कि ब्रिटिश राज ने भारतीय जनता को न केवल शासित किया, बल्कि उन्हें उनके अधिकारों से भी वंचित किया। इन सभी कारकों ने भारतीयों को एकजुट होने के लिए मजबूर किया। उन्होंने सामाजिक जागरूकता फैलाने का प्रयास किया, जिससे लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हो सकें। राष्ट्रीय नेताओं और बुद्धिजीवियों ने लोगों को संगठित किया और उन्हें यह समझाया कि उनकी स्वतंत्रता की लड़ाई केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। इस जागरूकता के साथ, विभिन्न वर्गों के लोग एक मंच पर आए, जिससे एक व्यापक जन आंदोलन का निर्माण हुआ, जो न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ था, बल्कि भारतीय समाज की आंतरिक समस्याओं का समाधान भी चाहता था।

इस प्रकार, सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता का यह संगठित प्रयास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव बना। आधुनिक शिक्षा ने समाज के कमजोर वर्गों के प्रति मौजूद संवहदनहीनता, कठोरता और अन्याय को उजागर किया। इसने बुद्धिजीवियों और

सामाजिक सुधारकों का ध्यान उन सामाजिक बुराइयों की ओर आकर्षित किया, जो समाज के भीतर व्याप्त हो चुकी थीं। सुधारकों ने अज्ञानता, अंधविश्वास और तर्कहीनता के कारण उत्पन्न कई सामाजिक कुरीतियों, जैसे सती प्रथा, बहुविवाह, बाल विवाह, महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार, छुआछूत और अन्य अंधविश्वासों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी। सामाजिक सुधारकों ने इस बात पर जोर दिया कि ये बुराइयाँ कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा गरीब और अज्ञानी जनता को गुमराह करने के लिए रची गई थीं। उन्होंने इन रीति-रिवाजों और अंधविश्वासों की आलोचना की और समाज में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। नई शिक्षा प्रणाली ने जाति या पंथ की सीमाओं को पार करते हुए भारतीय समाज के सभी वर्गों के लिए ज्ञान के द्वार खोले। हालांकि, इस स्वागत के बावजूद, आधुनिक शिक्षा के कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी सामने आए। इसने भारतीयों को उनके पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत और शास्त्रीय मूल्यों से दूर कर दिया। भारतीय मूल्य, दर्शन और परंपराएँ इस परिवर्तन के कारण कमजोर पड़ने लगीं। आधुनिक शिक्षा ने जाति व्यवस्था के बंधनों को ढीला कर दिया, जो पहले विभिन्न वर्गों में अनुशासन बनाए रखने और आपसी निर्भरता को बढ़ावा देने में सहायक थी। इसके परिणामस्वरूप, भारतीयों में सामाजिक मूल्यों और पारंपरिक व्यवस्थाओं के प्रति विश्वास में कमी आई। आज के समय में, कुछ भारतीय समूह प्रचलित सामाजिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों को अनुचित मानते है। यह बदलाव उनके सोचने के तरीके में आई एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है, जो आधुनिक शिक्षा के प्रभाव का परिणाम है। इस तरह, जबकि आधुनिक शिक्षा ने समाज में सुधार लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है, इसके साथ ही यह भी सच है, कि इसने समाज के कुछ मूलभूत तत्वों को प्रभावित किया है। यह एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक बदलाव के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने की चुनौतियाँ भी शामिल है।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा ने न केवल शासकों की इच्छाओं के अनुसार जनशक्ति तैयार की, बल्कि यह दूरदर्शी राष्ट्रीय नेताओं और सुधारकों के एक नए समूह का भी निर्माण किया। उन्नीसवीं सदी के अंत में, भारतीयों पर आधुनिक शिक्षा का गहरा प्रभाव स्पष्ट देखा गया। जब भारतीयों ने अंग्रेजी में लेख पढ़ना शुरू किया, तब उन्होंने विभिन्न देशों के स्वतंत्रता संग्राम और विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त की, जो राष्ट्रीय आंदोलन की नींव बनी। इस शिक्षा ने भारतीयों के मन में एकीकरण और राष्ट्रीय भावना का संचार किया। अंग्रेजों द्वारा पेश की गई शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाला। इस प्रगति ने लोगों की मानसिकता को आधुनिक बनाने में मदद की और सोचने के तरीकों में तर्क और विवहचना का स्थान दिया।

नई शिक्षा ने भारतीयों को विभिन्न परिस्थितियों पर सवाल उठाने और अधिक तर्कसंगत समाधान खोजने की प्रेरणा दी। अंतर्राष्ट्रीय क्रांतियों और विभिन्न दार्शनिकों के विचारों से प्रेरित होकर, भारतीयों ने ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई और इस प्रकार स्वतंत्र भारत की दिशा में कदम बढ़ाया। हालांकि ब्रिटिश शासन को वर्षों से दमनकारी और अत्याचारी कहा जाता रहा है, लेकिन यह भी सच है कि उन्होंने भारतीय समाज में कई प्रगतिशील तत्वों को भी स्थापित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे.सी./ आधुनिक भारतीय शिक्षा के इतिहास में मील के पत्थर/सातवां संस्करण, 2010/विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड/पृ.-13-16.
2. चैहान, सीपीएस/ आधुनिक भारतीय शिक्षा-नीतियाँ, प्रगित और समस्याएँ/नई
3. दिल्ली/किनष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2002/पृ.-22.

4. फारुके, एस, फिधा और गुप्ता/अनुरागशील, भारतीय शिक्षा प्रणाली पर ब्रिटिश शासन का सकारात्मक प्रभाव/इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लीगल डेवलपमेंट्स एंड एलाइड/खंड 4/अंक-6/नवंबर-2018/पृ.-13-15.
5. घोष सुरेश चंद्र/ आधुनिक भारत में शिक्षा का इतिहास 1757-2012/चैथा संस्करण-2013 ओरिएंट ब्लैक स्वान/पृ. 6-12. बनाम ग्रोवर, बी.एल. और मेहता, अलका, आधुनिक भारत के इतिहास पर एक नया दृष्टिकोण/2014/नई दिल्ली एस. चांद प्रकाशन/पृ.-312-313
6. हॉवेल, आर्थर/1854 से पहले और 1870 में ब्रिटिश भारत में शिक्षा/(1872)कोलकाता- सरकारी मुद्रण अधीक्षक, 314-15।
7. जे. पी. नाइक/भारत में विश्विवद्यालय शिक्षा का विकास 1860-1887,1963/दिल्ली/पृ. 231-32.
8. जयपालन, एन./भारत में शिक्षा का इतिहास/(2000)/नई दिल्ली/अटलांिटक प्रकाशक और वितरक/पृ.345-50.
9. मुखर्जी एस.एन./भारत में शिक्षा का इतिहास/1951/आचार्य बुक डिपो बड़ौदा/पृ. 14-18.
10. नूरुरल्लाह सैयद और नाइक जेपी/ब्रिटिश काल के दौरान भारत में शिक्षा का इतिहास/मैकिमलन एंड कंपनी लिमिटेड-1943/पृ.-45.
11. रायचैधरी एस.सी./ आधुनिक भारत का इतिहास 1707 से वर्तमान समय तक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का विस्तृत अध्ययन/2007/सुरजीत प्रकाशन/पृ. 156-70.